सही समझ व सही प्रयत्न :

योगवासिष्ठ से लिए गए उद्धरण

५

उस सुख का उपभोग करना चाहिए जो शान्ति से प्रवाहित होता है।
जिस साधक का मन भली भाँति संयमित हो, वह शान्ति में दृढ़प्रतिष्ठित होता है।
हृदय जब इस प्रकार शान्ति में प्रतिष्ठित होता है,
तब आत्मा का विशुद्ध आनन्द तत्काल उदित होता है।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

योगवासिष्ठ; स्वामी वेंकटेशानन्द, *The Supreme Yoga: Yoga Vasishtha* [दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास, २०१०] पृ. १४२।